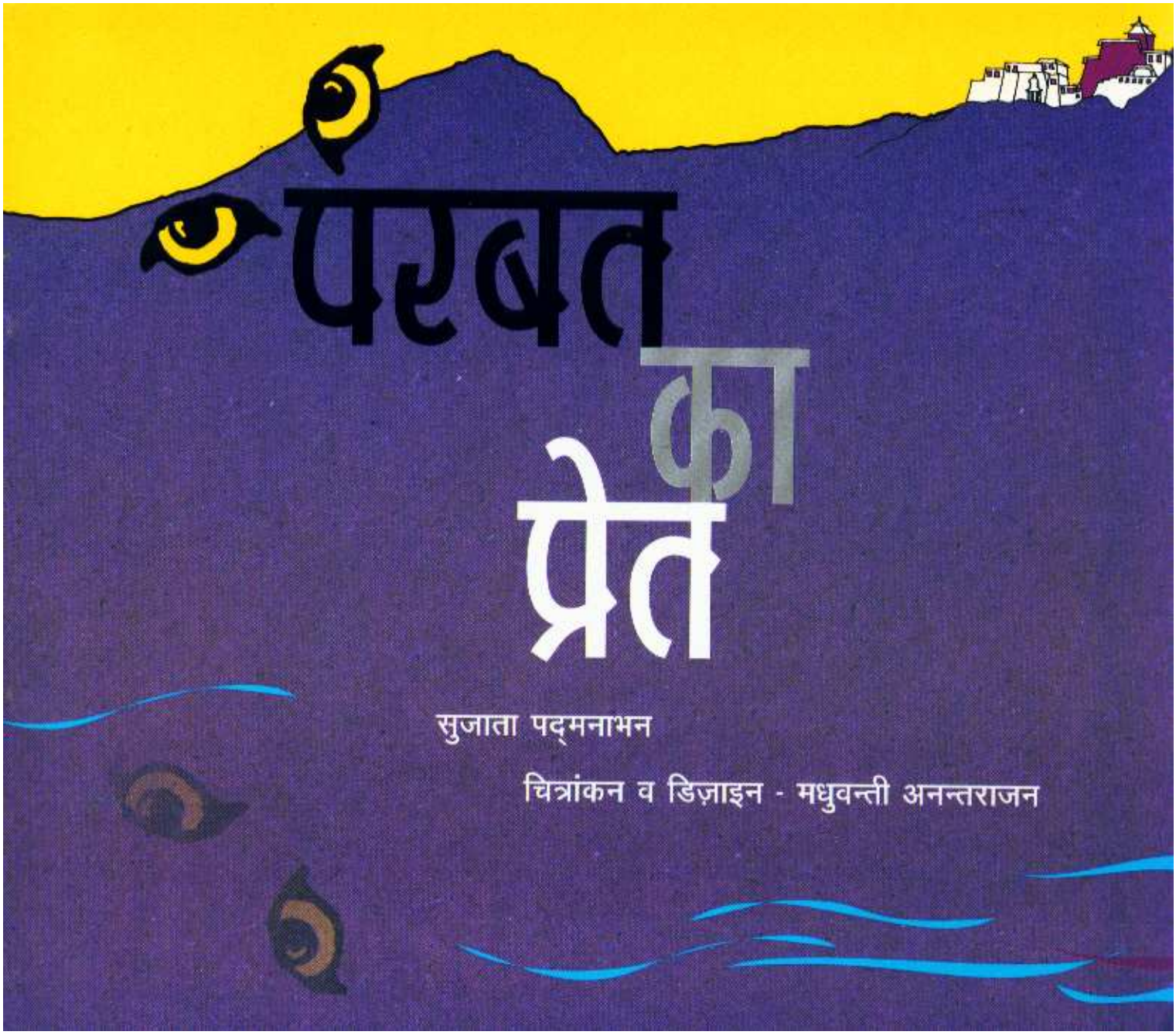
पर्बत का प्रेत
सुजाता पद्मनाभन
चित्रांकन व डिज़ाइन - मधुवन्ती अनन्तराजन

परबत का प्रेत

सुजाता पद्मनाभन
चित्रांकन व डिज़ाइनः मधुवन्ती अनन्तराजन

कल्पवृक्ष, स्नो लेपर्ड कॉन्ज़र्वेंसी - इंडिया ट्रस्ट एवं एकलव्य
का संयुक्त प्रकाशन

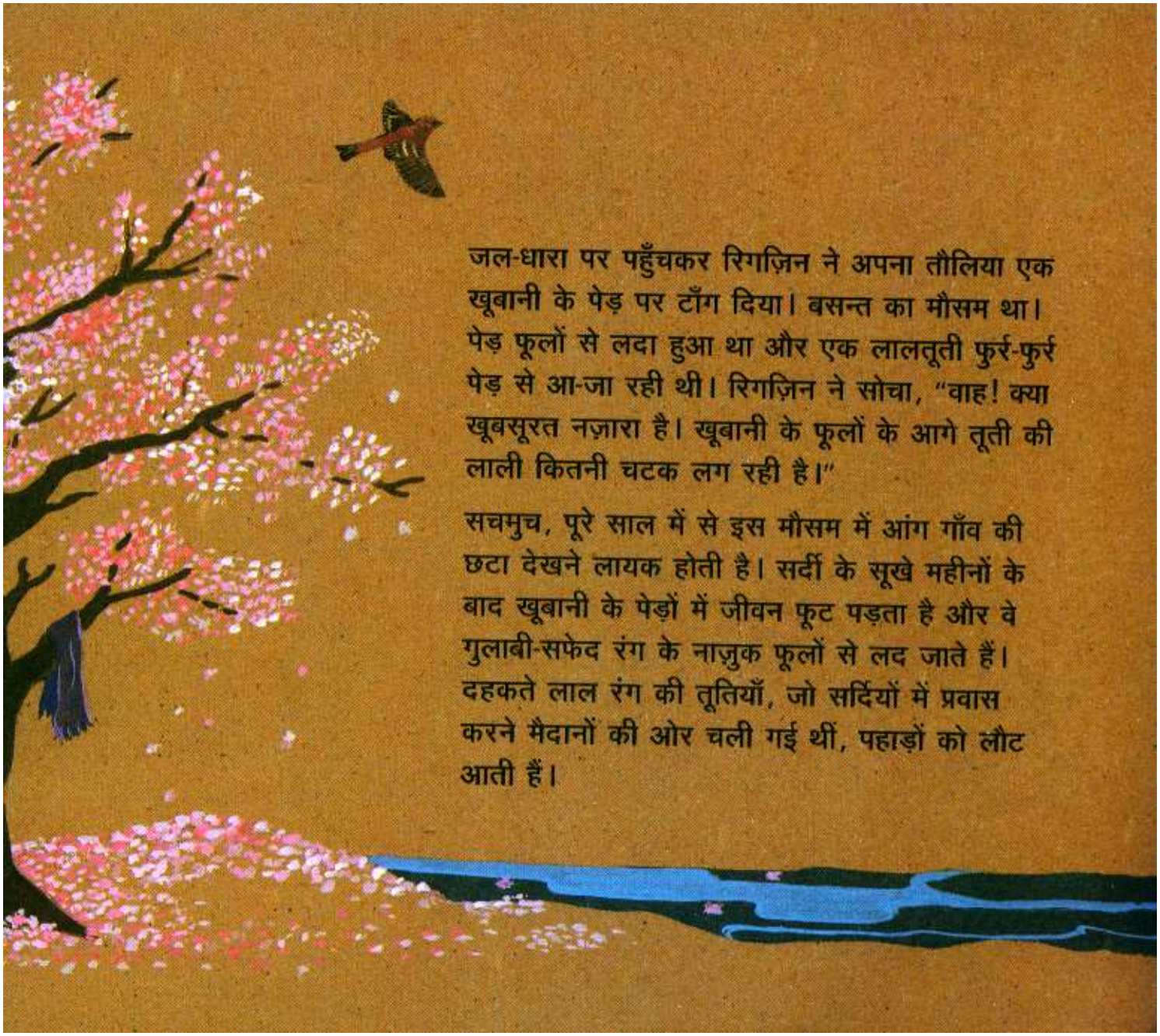

जल-धारा पर पहुँचकर रिगज़िन ने अपना तौलिया एक खूबानी के पेड़ पर टाँग दिया। बसन्त का मौसम था। पेड़ फूलों से लदा हुआ था और एक लालतूती फुर्र-फुर्र पेड़ से आ-जा रही थी। रिगज़िन ने सोचा, "वाह! क्या खूबसूरत नज़ारा है। खूबानी के फूलों के आगे तूती की लाली कितनी चटक लग रही है।"

सचमुच, पूरे साल में से इस मौसम में आंग गाँव की छटा देखने लायक होती है। सर्दी के सूखे महीनों के बाद खूबानी के पेड़ों में जीवन फूट पड़ता है और वे गुलाबी-सफेद रंग के नाज़ुक फूलों से लद जाते हैं। दहकते लाल रंग की तूतियाँ, जो सर्दियों में प्रवास करने मैदानों की ओर चली गई थीं, पहाड़ों को लौट आती हैं।

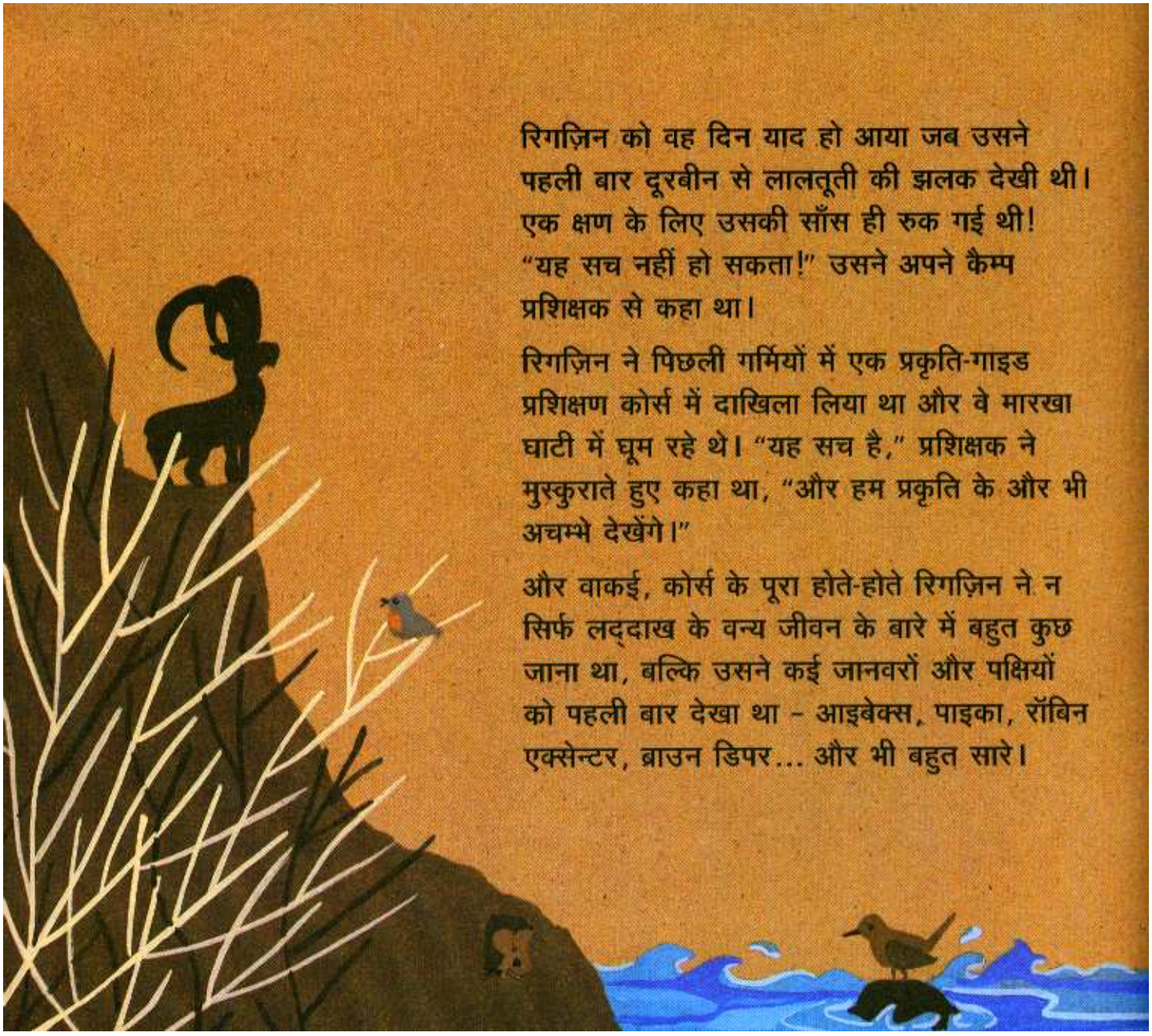

रिगज़िन को वह दिन याद हो आया जब उसने पहली बार दूरबीन से लालतूती की झलक देखी थी। एक क्षण के लिए उसकी साँस ही रुक गई थी! "यह सच नहीं हो सकता!" उसने अपने कैम्प प्रशिक्षक से कहा था।

रिगज़िन ने पिछली गर्मियों में एक प्रकृति-गाइड प्रशिक्षण कोर्स में दाखिला लिया था और वे मारखा घाटी में घूम रहे थे। "यह सच है," प्रशिक्षक ने मुस्कुराते हुए कहा था, "और हम प्रकृति के और भी अचम्भे देखेंगे।"

और वाकई, कोर्स के पूरा होते-होते रिगज़िन ने न सिर्फ लद्दाख के वन्य जीवन के बारे में बहुत कुछ जाना था, बल्कि उसने कई जानवरों और पक्षियों को पहली बार देखा था - आइबेक्स, पाइका, रॉबिन एक्सेन्टर, ब्राउन डिपर... और भी बहुत सारे।

अभी रिगज़िन चेहरे पर बर्फीले पानी के छपाके मार ही रहा था कि उसने किसी को दूर से आवाज़ लगाते सुना: "रिगज़िन, रिगज़िन!"

उसने गर्दन उठाकर देखा कि उसका दोस्त जिगमेत बहुत उत्तेजित होकर कुछ कह रहा है और ताशी के घर की ओर इशारा कर रहा है। "अब जिगमेत मुझे ताशी के घर क्यों भेजना चाहता है? मेरे पास आज बिलकुल समय नहीं है," रिगज़िन भुनभुनाया। पर अगले ही क्षण उसने देखा कि लोगों का एक झुण्ड "शान! शान!" चिल्लाते हुए ताशी के घर की ओर दौड़ा जा रहा था।

एक पल के लिए रिगज़िन के दिल की धड़कन रुक-सी गई। "शान? ताशी के घर? हो ही नहीं सकता!" उसने सोचा। पल भर में वह उठ खड़ा हुआ और ताशी के घर की ओर दौड़ पड़ा। वहाँ पहुँचते-पहुँचते उसे लग गया कि कुछ तो गड़बड़ है।

ताशी के घर के ल्हास के सामने काफी भीड़ जमा थी। कुछ लोग ल्हास की छत पर चढ़े हुए थे। लोगों के हाथों में विलो की लाठियाँ थीं और हल्ला मचा हुआ था - बहुत हो-हल्ला।

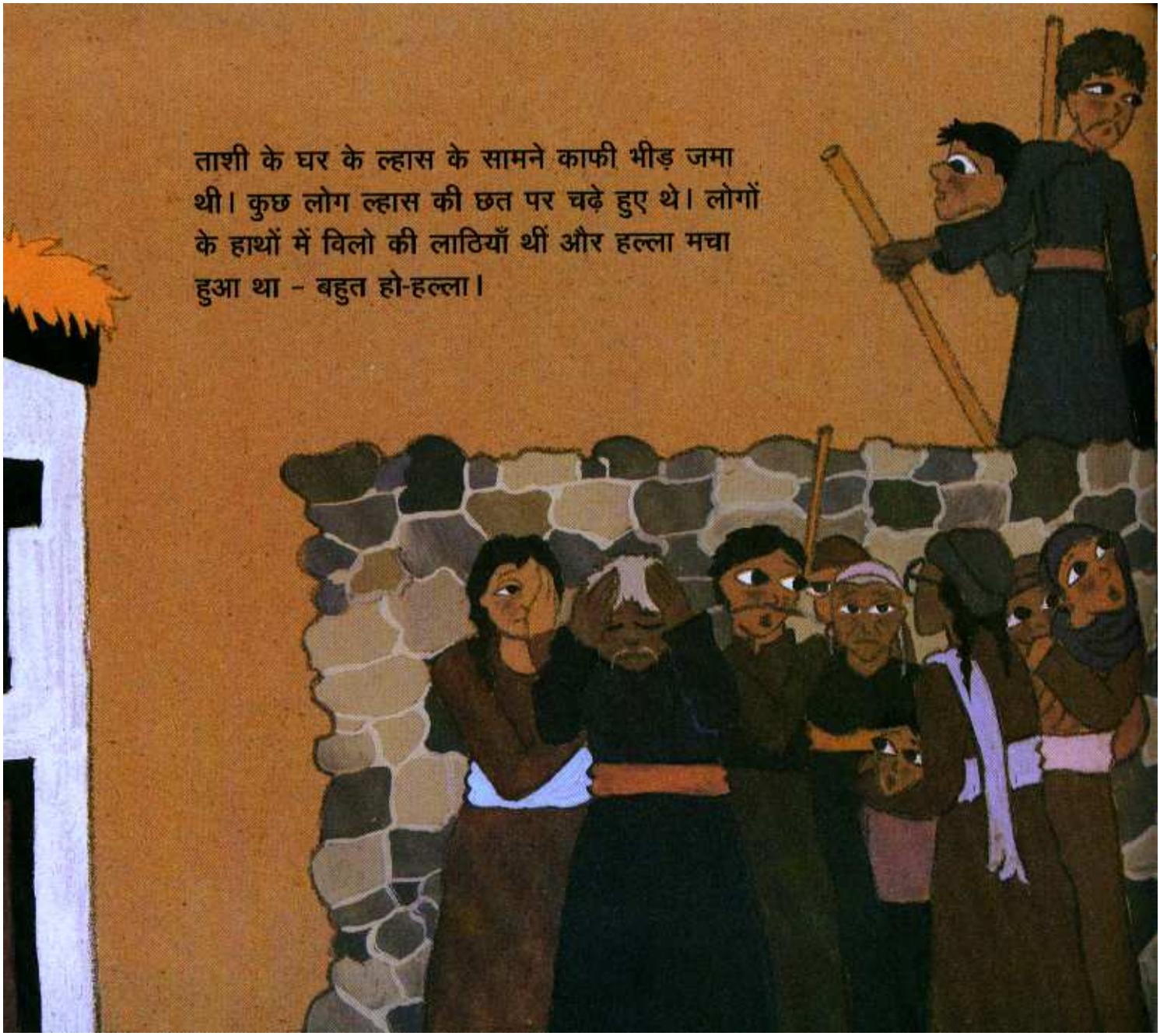

ल्हास लद्दाखी भाषा में उस जगह को कहते हैं जहाँ भेड़, बकरी, गाय और याक जैसे मवेशियों को रखा जाता है। लद्दाख में कहीं तो घर के साथ ही ल्हास बना होता है, और कई गाँवों में साझा ल्हास भी होते हैं। ये साझा ल्हास गाँव से दूर बनाए जाते हैं - पहाड़ों में काफी ऊँचाई पर मौजूद चरागाहों में। इनका उपयोग गर्मी के महीनों में किया जाता है। गाँववाले बारी-बारी से ल्हास के पास रहकर जानवरों की देखभाल करते हैं।

और शान, हिम-तेंदुए को कहते हैं।

"बहुत बड़ा है!"
"कितने जानवर मार दिए उसने?"
"पक्का पता नहीं, पर शायद कई सारे।"
"सुना है एक बछड़ा अभी भी ज़िन्दा है।"
"ध्यान से, ज़्यादा पास मत जाओ।"
"आंगमो, आंगमो! जल्दी मुखिया जी के घर जाओ और उन्हें तुरन्त यहाँ आने को कहो।"
वहाँ पर जमा लोग इकट्ठे बोल रहे थे। रिगज़िन को पूरी घटना समझने में कुछ वक्त लगा।

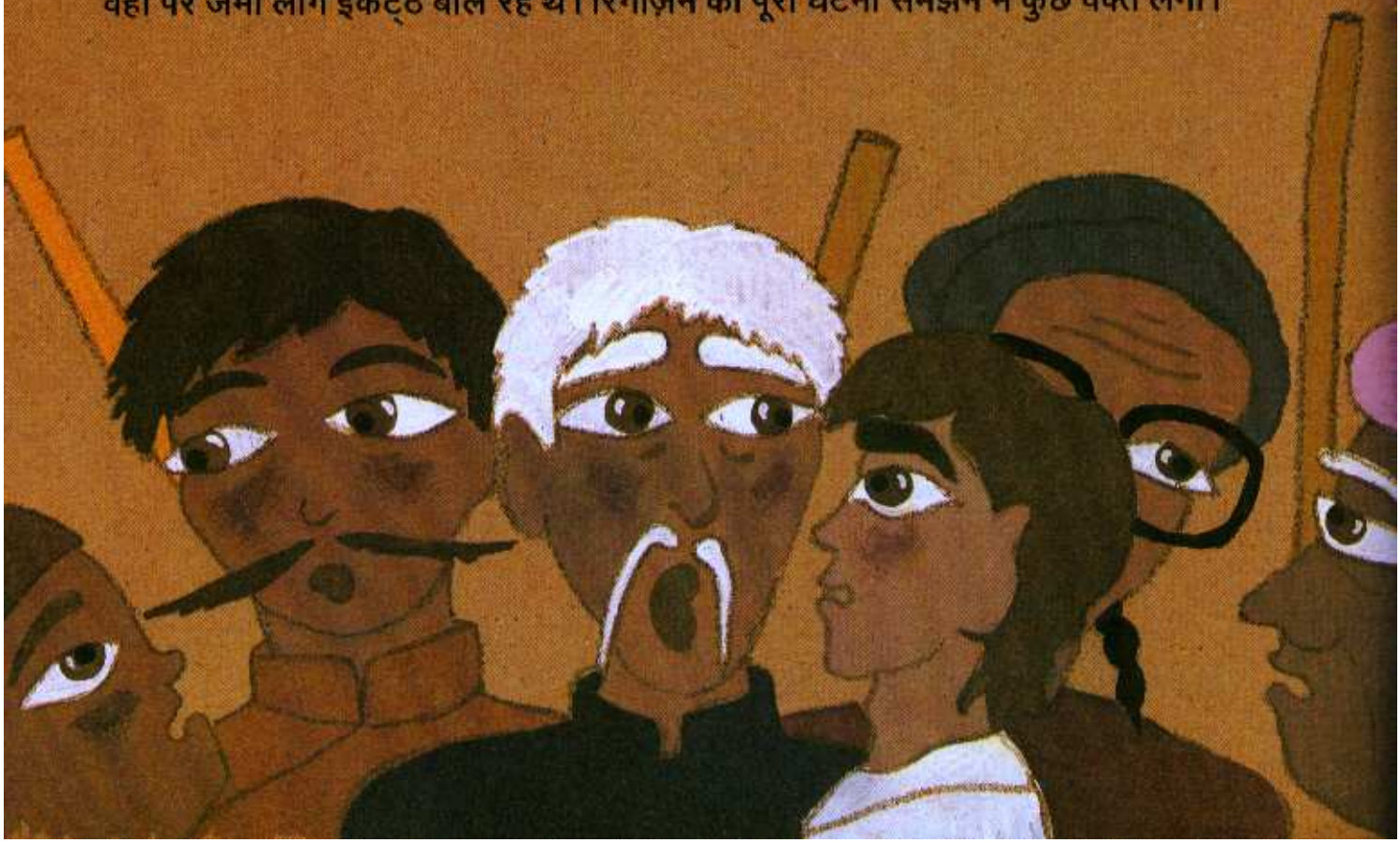

ताशी की पत्नी चोरोल, रोज़ की तरह ही सुबह उठी थी। पर जब वह चूल्हा सुलगाने के लिए जलावन की लकड़ी लेने छत पर गई, उसे एक धीमी गुर्राहट सुनाई दी। उसने दौड़कर ल्हास का दरवाज़ा खोला। वहाँ कोने में एक शान दुबका हुआ था। यह देखकर उसके भय का ठिकाना न रहा। फर्श पर खून के धब्बे फैले हुए थे। सारी भेड़-बकरियाँ निस्तेज पड़ी थीं। शान ने सबको मार डाला था। सिर्फ एक बछड़ा अछूता बचा था। चोरोल ने झट-से दरवाज़ा बन्द किया और अपने परिवार वालों को जगाने वापस दौड़ी।

"हे भगवान! मुझे तो यकीन नहीं होता।" रिगज़िन ने जिगमेत से कहा जो अब वहाँ आ गया था। "शान! यहाँ पर!" उसने ल्हास के दरवाज़े की ओर इशारा करते हुए कहा।

"हाँ रिगज़िन, वह बड़ा-सा है। ल्हास की छत पर चढ़ो तो उसकी झलक दिखाई देगी," जिगमेत ने कहा।

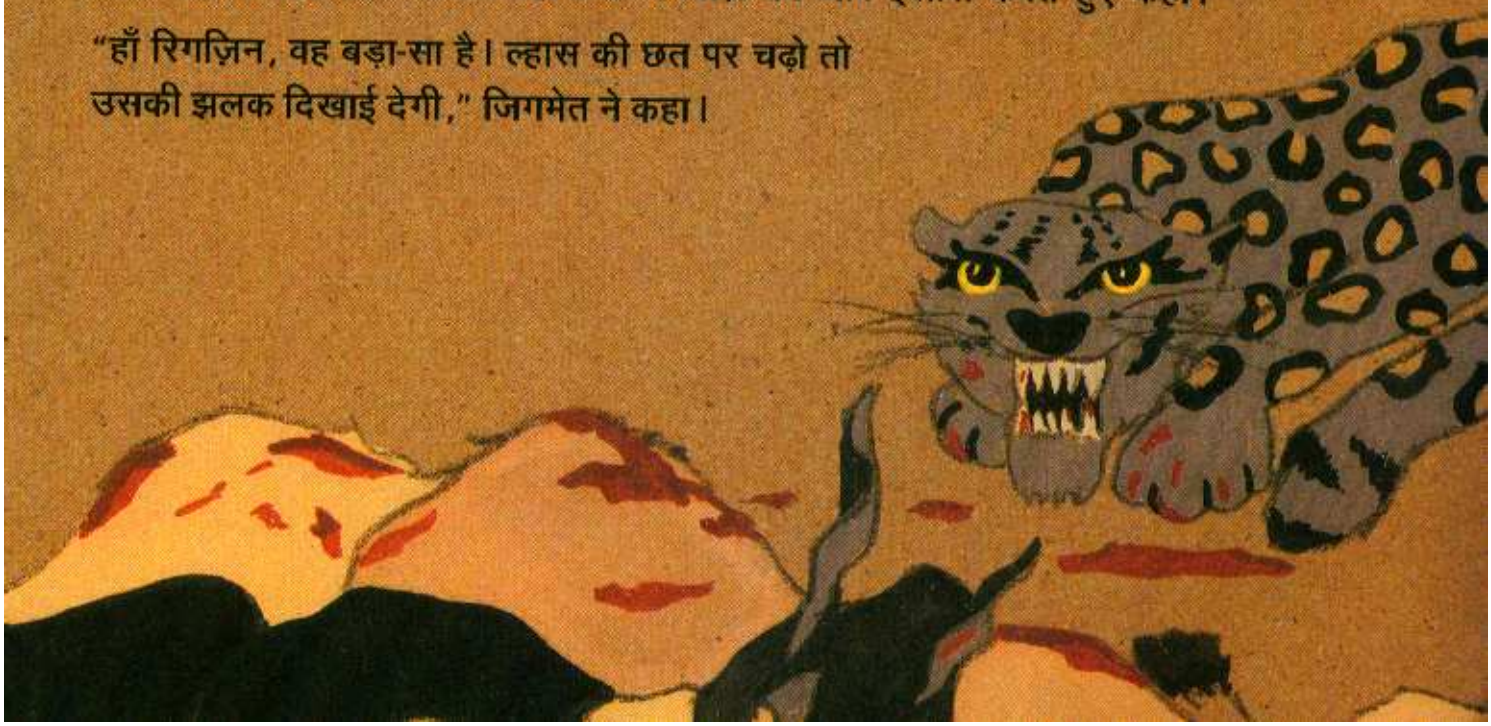

बिना वक्त गँवाए रिगज़िन घर के बाज़ू की ओर दौड़ा और छत पर चढ़ गया। उसने हिम-तेंदुआ पहले कभी नहीं देखा था। पर उसने प्रकृति गाइड कोर्स में इन शानदार जन्तुओं के बारे में बहुत कुछ जान लिया था। वहाँ बताया गया था कि ये जानवर अब लुप्तप्राय हैं और भारत के वन्य जीवन कानूनों के तहत सुरक्षित हैं। उसे इस बात से चिन्ता हुई थी कि देश में इस प्रजाति के अब तकरीबन पाँच सौ जानवर ही बचे थे, पर इस बात पर गर्व भी था कि उनका इलाका इन लुप्तप्राय बड़ी बिल्लियों का घर था। उसे यह जानकर बहुत हैरानी हुई थी कि ये जानवर किस तरह गन्ध के माध्यम से एक-दूसरे से बातचीत करते थे। वे अक्सर पहाड़ों से उभड़कर लटक रही बड़ी चट्टानों पर गन्ध छोड़ते थे। "दूर रहो! यह मेरा इलाका है," नर तेंदुए अक्सर दूसरे नरों के लिए यही सन्देश छोड़ते थे। पर मादाओं के लिए उनके सन्देश बिलकुल अलग होते थे: "मैं जवान और छबीला हूँ। क्या तुम्हारी रुचि मुझमें होगी?"

हिम-तेंदुओं की पूँछ बहुत लम्बी होती है। लगभग उनके शरीर के बराबर। जब उसे बताया गया कि वे ठण्ड से बचने के लिए अपनी पूँछ को शरीर पर लपेट लेते हैं तो रिगज़िन ने चहकते हुए कहा था, "जैसे हम शॉल लपेटते हैं!"

छत पर मौजूद लोग वहाँ एक तरफ बने छेद में झाँक रहे थे। रिगज़िन भी उनमें शामिल हो गया और अपनी गर्दन घुसाकर देखने की कोशिश करने लगा। हाँ, वह रहा, एक जीता-जागता हिम-तेंदुआ! भय और उत्तेजना से भरा रिगज़िन जैसे सुन्न पड़ गया। उसे लगता था कि यह एक ऐसा जानवर है जिसे वह कभी देख नहीं सकेगा। लोग हिम-तेंदुए को "परबत का प्रेत" कहते हैं क्योंकि वह इस चट्टानी इलाके में इतनी सहजता से छिप जाता है कि बमुश्किल ही दिखता है। हालाँकि वह तेंदुए को पूरी तरह तो नहीं देख पा रहा था, पर उसके डील-डौल से बता सकता था कि यह एक भरा-पूरा वयस्क था।

छेद से झाँकते हुए रिगज़िन निश्चल नन्हे बछड़े को देख सकता था। ल्हास में वह अकेला जानवर था जिसे बख्श दिया गया था। कम से कम अभी तक तो।
तेंदुआ बछड़े के खासा करीब था पर उसका ध्यान छत के
छेद पर था जिसके चारों ओर भीड़ जमा थी।

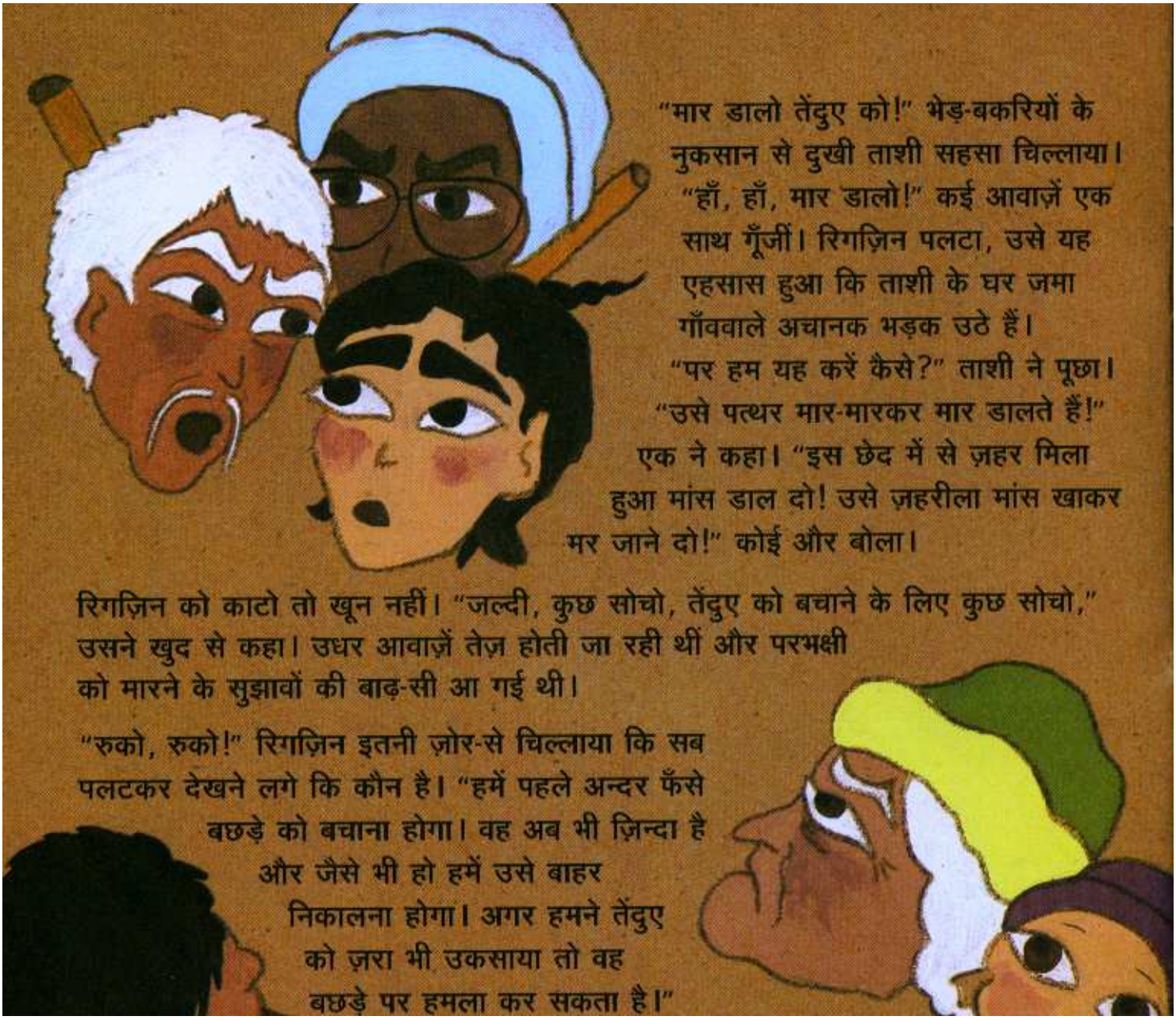

"मार डालो तेंदुए को!" भेड़-बकरियों के नुकसान से दुखी ताशी सहसा चिल्लाया। "हाँ, हाँ, मार डालो!" कई आवाज़ें एक साथ गूँजीं। रिगज़िन पलटा, उसे यह एहसास हुआ कि ताशी के घर जमा गाँववाले अचानक भड़क उठे हैं।

"पर हम यह करें कैसे?" ताशी ने पूछा।

"उसे पत्थर मार-मारकर मार डालते हैं!" एक ने कहा। "इस छेद में से ज़हर मिला हुआ मांस डाल दो! उसे ज़हरीला मांस खाकर मर जाने दो!" कोई और बोला।

रिगज़िन को काटो तो खून नहीं। "जल्दी, कुछ सोचो, तेंदुए को बचाने के लिए कुछ सोचो," उसने खुद से कहा। उधर आवाज़ें तेज़ होती जा रही थीं और परभक्षी को मारने के सुझावों की बाढ़-सी आ गई थी।

"रुको, रुको!" रिगज़िन इतनी ज़ोर-से चिल्लाया कि सब पलटकर देखने लगे कि कौन है। "हमें पहले अन्दर फँसे बछड़े को बचाना होगा। वह अब भी ज़िन्दा है और जैसे भी हो हमें उसे बाहर निकालना होगा। अगर हमने तेंदुए को ज़रा भी उकसाया तो वह बछड़े पर हमला कर सकता है।"

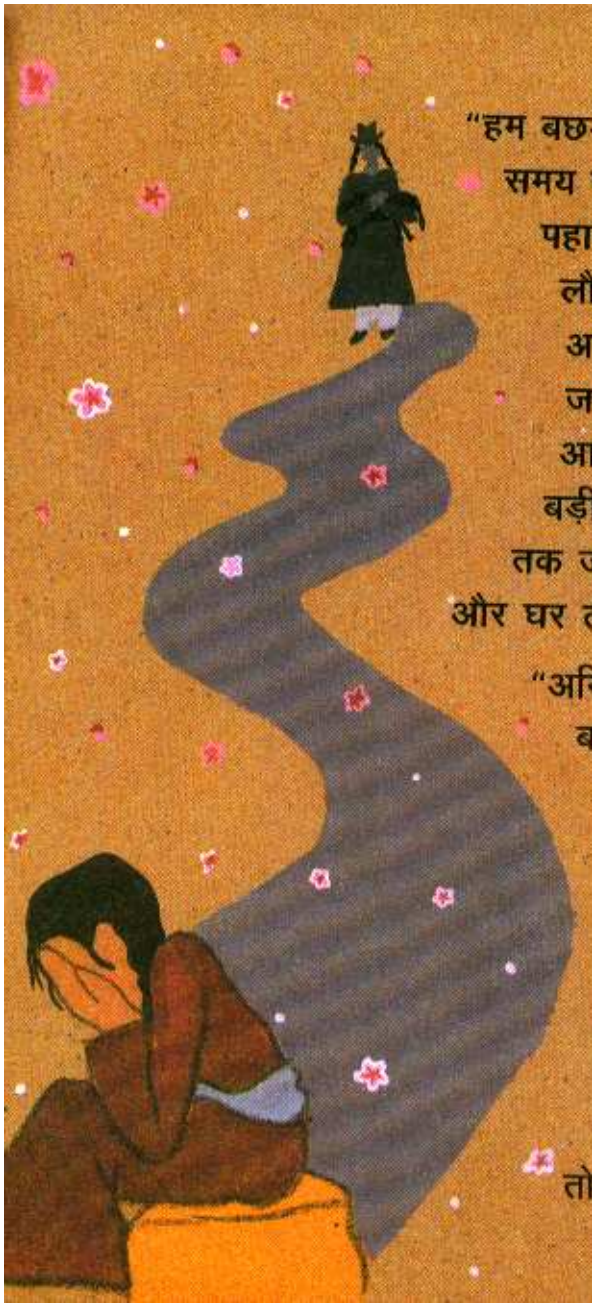

"हम बछड़े को कैसे बचा सकते हैं?" चोरोल सुबकने लगी। उसे वह समय याद हो आया जब बछड़ा पैदा हुआ था। उनकी गाय ने पहाड़ी पर चरते हुए बछड़े को जन्म दिया था। जब वह घर लौटी तो बच्चा साथ न था। पूरा एक दिन चोरोल ने आंग के आसपास की पहाड़ियों में बछड़े को ढूँढने में लगा दिया था। जब वह लगभग हार मान चुकी थी, तभी उसे बछड़ा नज़र आया। नवजात बछड़ा - कमज़ोर और काँपता हुआ - एक बड़ी चट्टान के पास लेटा था। उसमें माँ के पीछे-पीछे गाँव तक जाने की ताकत नहीं थी। चोरोल ने उसे गोद में भर लिया और घर ले आई।

"अनि-ले," रिगज़िन बोला, "रोओ मत। तुम्हारा बछड़ा ज़रूर बचेगा। मेरे पास एक तरकीब है - हम तेंदुए का ध्यान बँटाते हैं।"

वह कुछ और कहे उसके पहले ही गाँव के मुखिया ने व्यंग्य कसा, "रिगज़िन, क्या तुम लोरी गाकर उसे सुलाने वाले हो?" तनाव के बावजूद सब हँस पड़े।

"अगर मुझे गाना आता, तो मैं ज़रूर गाता अज़ांग-ले," रिगज़िन ने कहा। उसे राहत मिली कि कम से कम गाँववालों का ध्यान तेंदुए को मारने के तरीके सोचने से तो हट गया था।

"मेरी बात तो सुनिए। अभी तेंदुआ बछड़े के बिलकुल करीब है - ल्हास के इस तरफ। आप छेद में से बछड़े को उसके पास देख सकते हैं, है न? हम लोग छत के दूसरे छोर पर एक और छोटा छेद बनाते हैं। आप सब उस नए छेद में से झाँकते हुए शोर मचाइएगा। तेंदुए को इससे परेशानी होगी और वह ज़रूर यह देखने दूसरी तरफ जाएगा कि आप कर क्या रहे हैं। इधर आप लोग उसका ध्यान बँटाएँगे, उधर मैं झट-से ल्हास में घुसकर बछड़े को बचा लाऊँगा।"

"तुम पागल हो!" मुखिया उस पर हँसे, और सबने सहमति में सिर हिलाया। बस चोरोल को छोड़कर। वह दौड़कर रिगज़िन के पास आई और आँखों में आँसू लिए बोली, "तेंदुए के अन्दर रहते तुम्हारा ल्हास में घुसना सुरक्षित नहीं है। क्या तुम मेरे बच्चे को बचाने का कोई और तरीका नहीं सोच सकते?"

"हिम-तेंदुए ने अब तक इन्सानों पर कभी हमला नहीं किया है। जितने भी देशों में यह पाया जाता है, कहीं भी आज तक हमले की एक भी घटना दर्ज नहीं है। चिन्ता मत करो। मुझे पूरा विश्वास है कि मैं बिलकुल ठीक रहूँगा।"

इतना कहकर रिगज़िन ने एक लाठी उठाई और छत के दूसरे सिरे को ठोकने लगा। सब लोग उसके साथ जुट गए और जल्दी ही एक छोटा-सा छेद बन गया। इससे सचमुच ही तेंदुए को गुस्सा आ गया। पहले तो वह ल्हास के इस तरफ आ गया और उस छोटे-से छेद पर नज़र गड़ाए खड़ा रहा। फिर जब छत के लोग शोर मचाने लगे तो वह छेद की तरफ उछलने लगा। पर छत बहुत ऊँची थी और तेंदुआ उसे अपने अगले पंजों से छू भी नहीं पा रहा था।

एक पल भी गँवाए बिना, रिगज़िन दौड़कर नीचे ल्हास की ओर गया। "शान्त रहो," ल्हास के दरवाज़े पर हाथ रखते हुए उसने खुद से कहा। उसने एक गहरी साँस ली और दरवाज़ा खोला। दबे पाँव, फुर्ती से वह बछड़े तक गया और उसे उठा लिया। जैसे ही वह वापस पलटा, उसने तेंदुए को भी पलटते हुए देखा। शान ने उसे देख लिया था! रिगज़िन दरवाज़े की ओर लपका। झटाक-से दरवाज़ा बन्द करते हुए उसे दरार में से भूरे रंग की एक झलक दिखाई दी। तेंदुआ चूक गया था – बस बित्ते भर से!

ल्हास के बाहर आकर रिगज़िन बछड़े को गोद में लिए ही ज़मीन पर बैठ गया। कुछ ही पलों में सारे गाँववाले छत से उतरकर उसके पास जमा हो गए।

"वह ज़िन्दा है! वह ठीक है" एक चिल्लाया।

"उसने बछड़े को बचा लिया," दूसरा चिल्लाया।

"बछड़ा अभी भी साँस ले रहा है। आंगमो, उसे घर के अन्दर ले जाओ और थोड़ा दूध पिलाओ। वह अब भी बहुत डरा हुआ होगा," किसी ने सलाह दी।

"ओ रिगज़िन। मैं तुमको लेकर बहुत डर गया था," जिगमेत ने कहा और वह रिगज़िन के पास बैठ गया।

रिगज़िन ने बछड़ा आंगमो को थमा दिया। ताशी और चोरोल ने आकर उसके हाथ कसकर थाम लिए। गाँव वाले रिगज़िन की पीठ थपथपाने लगे। उसने जो किया उसके लिए धन्यवाद देने का यह उनका तरीका था।

जब बछड़े को बचा लाने का जोश कुछ थमा तो किसी ने पूछा, "अब हम शान का क्या करें?"

"मार डालें, और क्या?" ताशी ने कहा।

"अरे नहीं! हम हिम-तेंदुआ नहीं मार सकते, अज़ांग-ले," रिगज़िन उछल खड़ा हुआ।

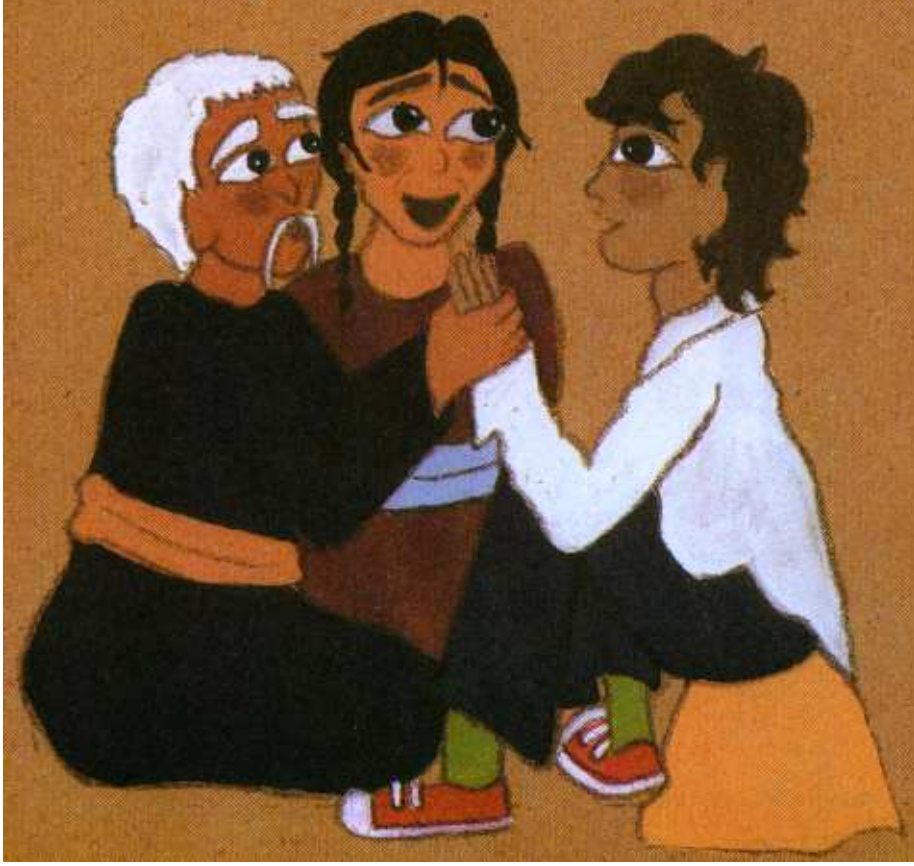

"क्यों नहीं?" एक गाँववाले ने पूछा। "पिछले साल एक तेंदुए ने मेरा याक मार दिया था।"

"और मेरी दो भेड़ें भी," एक और ने जोड़ा।

"तीन साल पहले मैंने चार मेढ़े गँवा दिए," तीसरे ने कहा।

"हिम-तेंदुए जितने कम होंगे, हमारे मवेशी उतने ही सुरक्षित रहेंगे।"

"हाँ, चलो उसे मार डालें!"

"मार डालो! मार डालो!" कई आवाज़ें एक साथ गूँज उठीं।

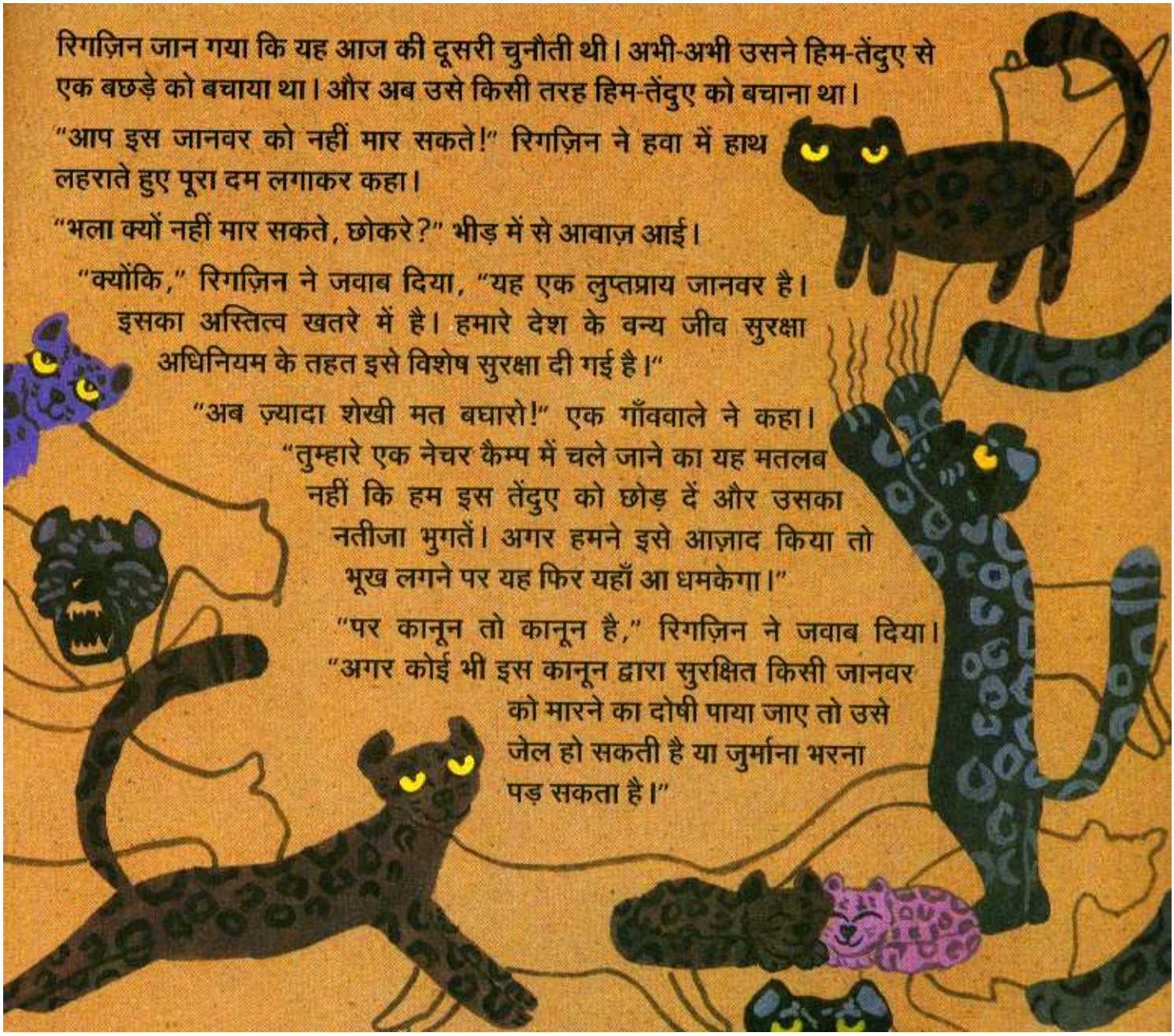

रिगज़िन जान गया कि यह आज की दूसरी चुनौती थी। अभी-अभी उसने हिम-तेंदुए से एक बछड़े को बचाया था। और अब उसे किसी तरह हिम-तेंदुए को बचाना था।

"आप इस जानवर को नहीं मार सकते!" रिगज़िन ने हवा में हाथ लहराते हुए पूरा दम लगाकर कहा।

"भला क्यों नहीं मार सकते, छोकरे?" भीड़ में से आवाज़ आई।

"क्योंकि," रिगज़िन ने जवाब दिया, "यह एक लुप्तप्राय जानवर है। इसका अस्तित्व खतरे में है। हमारे देश के वन्य जीव सुरक्षा अधिनियम के तहत इसे विशेष सुरक्षा दी गई है।"

"अब ज़्यादा शेखी मत बघारो!" एक गाँववाले ने कहा। "तुम्हारे एक नेचर कैम्प में चले जाने का यह मतलब नहीं कि हम इस तेंदुए को छोड़ दें और उसका नतीजा भुगतें। अगर हमने इसे आज़ाद किया तो भूख लगने पर यह फिर यहाँ आ धमकेगा।"

"पर कानून तो कानून है," रिगज़िन ने जवाब दिया। "अगर कोई भी इस कानून द्वारा सुरक्षित किसी जानवर को मारने का दोषी पाया जाए तो उसे जेल हो सकती है या जुर्माना भरना पड़ सकता है।"

"पर किसे पता चलेगा कि हमने हिम-तेंदुआ मारा है?" भीड़ में से किसी ने पूछा। "वन्य जीव अधिकारी तो दूर लेह में बैठे हैं। अगर हम इस बारे में चुप रहें तो किसी को कुछ पता नहीं चलेगा।"

"मैं इस मामले में चुप नहीं रहूँगा," रिगज़िन ने चेताया। उसकी आँखें और आवाज़ गुस्से से भरी थीं। "अगर इस जानवर को मारा गया तो मैं वन्य जीव विभाग में आप सबकी शिकायत करूँगा।"

"हमसे इस तरह बात करने की तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई? याद रखो कि तुम हमसे आधी उम्र के हो," ताशी ने गुस्से से कहा। इतने में मुखिया बीच में आ गए। उन्होंने कहा, "सब लोग शान्त हो जाएँ। हमें मिल-बैठकर चर्चा करनी चाहिए कि आगे क्या करना है।"

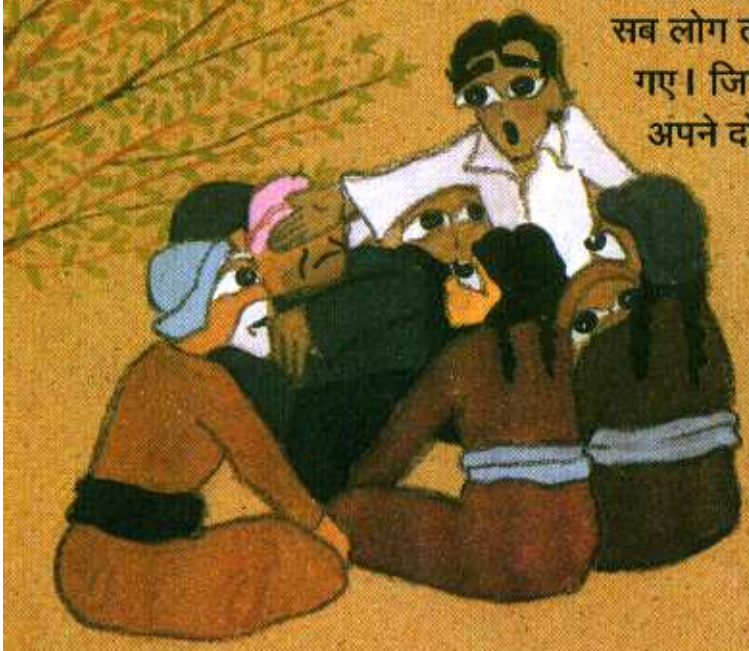

सब लोग ताशी के घर के पास वाले विलो के पेड़ के नीचे बैठ गए। जिगमेत रिगज़िन के पास बैठा। उसे एक बार फिर अपने दोस्त के लिए डर लग रहा था।

"चर्चा करने के लिए कुछ है ही नहीं अज़ांग-ले," रिगज़िन ने बात शुरू की। "यह जानवर खतरे में है। आज दुनिया में सिर्फ 5000 के लगभग ही हिम-तेंदुए बचे हैं। इनमें से कुछ उन नाराज़ गाँववालों द्वारा मारे जा रहे हैं जिन्होंने अपने मवेशी खो दिए हैं। कई तो सिर्फ खाल और हड्डियों के लिए मार दिए जाते हैं।"

"हाँ, यह सच है," आंगमो बोली। वह बछड़े को दूध पिलाने के बाद वहाँ आ गई थी। "मैंने यह बात एक शाम रेडियो पर सुनी थी। हाल में ही एक तस्कर 100 से भी ज़्यादा खालों के साथ पकड़ा गया था। और इनमें से कई खालें हिम-तेंदुए की थीं।"

"एक आदमी के पास 100 खालें?" एक गाँववाला चौंका। आश्चर्य से उसकी आँखें फट रही थीं!

"हाँ, लुप्तप्राय जीवों का चोरी-छिपे शिकार एक गम्भीर मसला है। यह तो अच्छा है कि यह समस्या लद्दाख में नहीं है वर्ना यह बड़े शर्म की बात होती। तेंदुए के अलावा कई और जानवर भी खाल के लिए मारे जाते हैं जैसे ऊदबिलाव, बाघ, लाल लोमड़ी आदि। बाघ की खाल से तो ये तस्कर हज़ारों रुपए कमा लेते हैं।"

"पर लद्दाख में तो कोई बाघ नहीं है," आंगमो ने कहा।

"हाँ, यह बात सही है," रिगज़िन ने जवाब दिया। "बाघ की हड्डियाँ पारम्परिक चीनी दवाओं में उपयोग की जाती हैं। अब जब बाघों की संख्या कम हो रही है तो इसकी जगह हिम-तेंदुए की हड्डी ने ले ली है। अगर यही चलता रहा तो जल्दी ही हमारे देश से हिम-तेंदुए पूरी तरह खत्म हो जाएँगे। हमारे बच्चे और उनके बच्चे सिर्फ उनकी तस्वीरें-भर देख पाएँगे।"

"और उनकी कहानियाँ सुनेंगे," चोरोल ने जोड़ा।

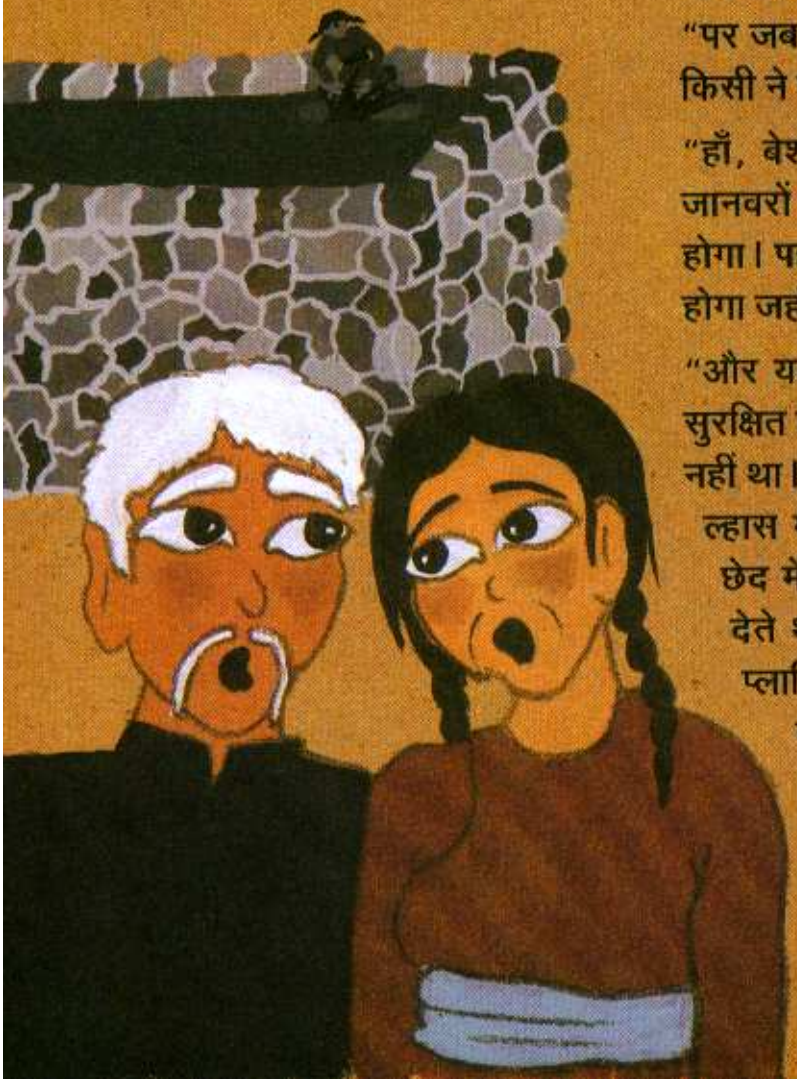

"हाँ, बिलकुल ठीक," रिगज़िन ने मुस्कुराकर कहा। उसे यह लगने लगा था कि भीड़ अब तेंदुए को मारने पर उतनी उतारू नहीं थी।

"पर जब हमारे मवेशी मारे जाते हैं तब हम क्या करें?" किसी ने पूछा। "हमें गुस्सा तो आएगा ही।"

"हाँ, बेशक। पर हमें कई तरह के हल ढूँढने होंगे। जानवरों को चराने ले जाते समय ज़्यादा सतर्क रहना होगा। पहाड़ों में खड़ी चढ़ाई वाले इलाकों से दूर रहना होगा जहाँ रहना तेंदुए को पसन्द है।"

"और यह पक्का करना होगा कि ल्हास पूरी तरह से सुरक्षित है," चोरोल ने जोड़ा। "छत में छेद करना ठीक नहीं था। यह हमने पिछले साल तब बनाया था जब हम ल्हास में घास इकट्ठा करके रखते थे। हम छत के छेद में से ही अल्फाल्फा घास के गट्ठर अन्दर गिरा देते थे। इस साल हमने छेद को एक कामचलाऊ प्लास्टिक की पन्नी से ढँक दिया था पर तेंदुए ने उसे फाड़ डाला।"

"सचमुच, हमारी ही गलती है," ताशी के स्वर में पछतावा था।

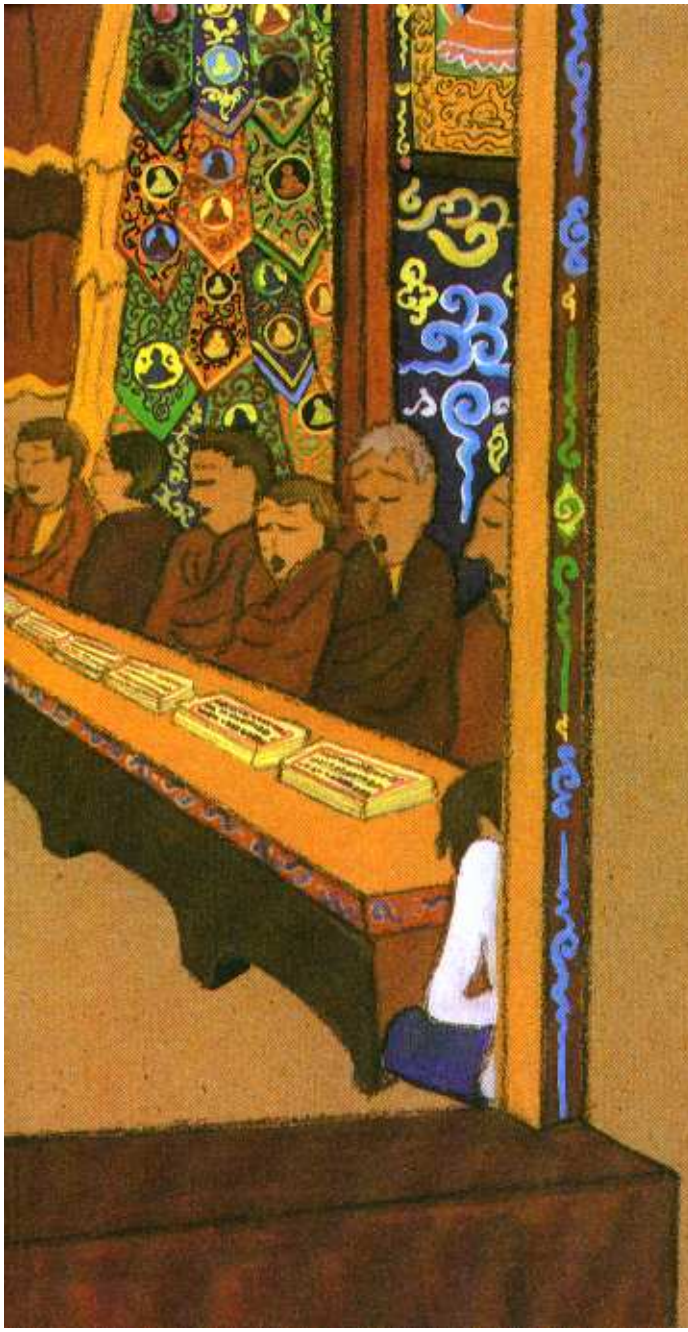

बहुत रात गए, रिगज़िन मठ के एक मन्दिर के कोने में प्रार्थना करने बैठा। दिन बहुत सारी घटनाओं से भरा रहा था। एक बार जब उसने गाँववालों को तेंदुए को न मारने के लिए मना लिया, तो उसने उसके बारे में लेह के वन्य जीव विभाग को खबर कर दी।

दोपहर तक तीन अधिकारी और एक मवेशी डॉक्टर जीप पर सवार होकर गाँव आ पहुँचे। एक बार फिर पूरा गाँव उनकी कार्यवाही को देखने के लिए ताशी के घर जमा हो गया।

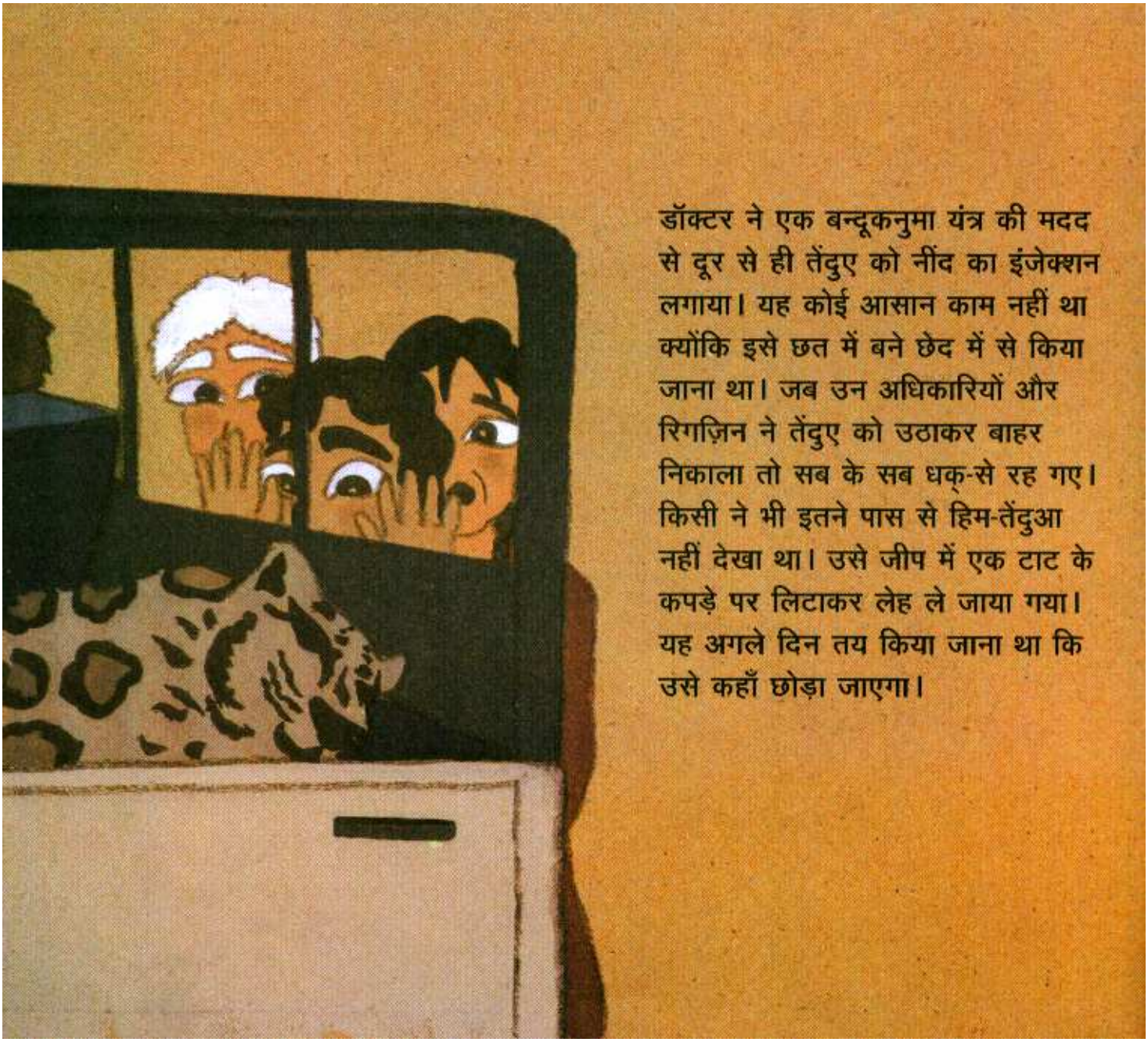

डॉक्टर ने एक बन्दूकनुमा यंत्र की मदद से दूर से ही तेंदुए को नींद का इंजेक्शन लगाया। यह कोई आसान काम नहीं था क्योंकि इसे छत में बने छेद में से किया जाना था। जब उन अधिकारियों और रिगज़िन ने तेंदुए को उठाकर बाहर निकाला तो सब के सब धक्-से रह गए। किसी ने भी इतने पास से हिम-तेंदुआ नहीं देखा था। उसे जीप में एक टाट के कपड़े पर लिटाकर लेह ले जाया गया। यह अगले दिन तय किया जाना था कि उसे कहाँ छोड़ा जाएगा।

मठ में बौद्ध भिक्षुओं ने एक सुर में मंत्र गाने शुरू किए। जूनिपर अगरबत्ती की खुशबू हवा में फैल गई। मन्दिर की खिड़कियों से आती चाँद की किरणें रुपहली रोशनी फैला रही थीं - कुछ-कुछ भुतहा-सी। "बिलकुल हमारे परबत के प्रेत की तरह," रिगज़िन ने सोचा, और उसने मुस्कुराते हुए आँखें मूँद लीं। उसे पता था कि इन खूबसूरत पहाड़ों में जल्द ही एक हिम-तेंदुआ आज़ाद फिरेगा।

कहानी में आए लद्दाखी शब्द

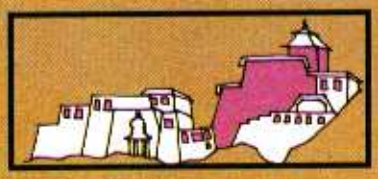

गोम्पा: बौद्ध मठ

अमा-ले: माँ

शान: हिम-तेंदुआ

ल्हास: वह बाड़ा जिसमें मवेशी रखे जाते हैं।

अनि-ले: किसी भी बुज़ुर्ग महिला के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला आदर-सूचक सम्बोधन।

अज़ांग-ले: किसी भी बड़े व्यक्ति के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला आदर-सूचक सम्बोधन।

सुजाता पद्मनाभन 1984 से कल्पवृक्ष की सदस्य हैं, जहाँ उनका प्रमुख जुड़ाव बच्चों के लिए पर्यावरण शिक्षा के क्षेत्र में रहा है। वे कर्नाटक के बिलिगिरि रंगास्वामी टेम्पल वन्य जीव अभयारण्य तथा लद्दाख के ठण्डे रेगिस्तानों में क्षेत्र-आधारित पर्यावरण शिक्षा कार्यक्रम विकसित व कार्यान्वित करने में सक्रिय रही हैं। उन्होंने बच्चों के लिए दो कहानी की किताबें लिखी हैं, जिनमें *परबत का प्रेत* शामिल है। यह कहानी लद्दाख में उनके काम के दौरान लिखी गई थी। इसके अलावा उन्होंने शिक्षकों व शिक्षाविदों के लिए पर्यावरण शिक्षा पुस्तिकाएँ भी लिखी हैं। उन्हें प्रकृति-दर्शन और पहाड़ों में टहलना प्रिय है।

मधुवन्ती को पढ़ना, चित्र बनाना और चित्रों को देखना पसन्द है। एक स्वतंत्र चित्रकार और डिज़ाइनर होने से वे काम करते हुए ये तीनों ही कर पाती हैं। उन्होंने कला के इतिहास की पढ़ाई की है और शिक्षा में उनकी गहरी रुचि है। उन्होंने भारत भर में कई शैक्षिक कार्यक्रमों में एक चित्रकार, डिज़ाइनर और कार्यशाला प्रवर्तक के रूप में काम किया है। अपने काम के अलावा उन्हें अच्छा खाना, लम्बी सैर और गपशप पसन्द है।

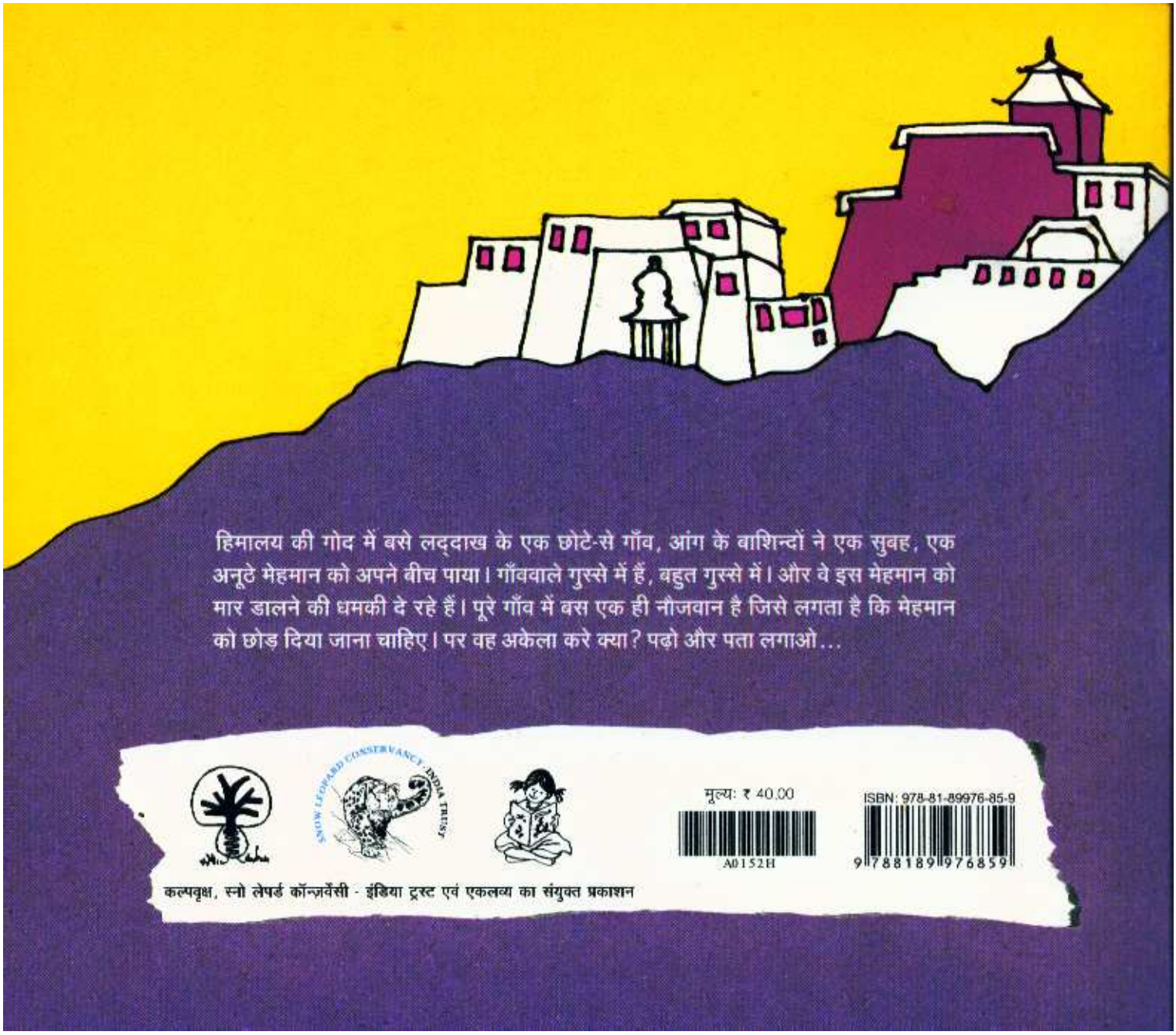

हिमालय की गोद में बसे लद्दाख के एक छोटे-से गाँव, आंग के वाशिन्दों ने एक सुबह, एक अनूठे मेहमान को अपने बीच पाया। गाँववाले गुस्से में हैं, बहुत गुस्से में। और वे इस मेहमान को मार डालने की धमकी दे रहे हैं। पूरे गाँव में बस एक ही नौजवान है जिसे लगता है कि मेहमान को छोड़ दिया जाना चाहिए। पर वह अकेला करे क्या? पढ़ो और पता लगाओ...

मूल्य: ₹ 40.00
A0152H
ISBN: 978-81-89976-85-9
9 788189 976859
कल्पवृक्ष, स्नो लेपर्ड कॉन्ज़र्वेंसी - इंडिया ट्रस्ट एवं एकलव्य का संयुक्त प्रकाशन